सत्यवचन

प्रोग्राम नं० 32

उत्पत्ति 17:9—18:8

प्रिय श्रोता मित्रों, प्रभु यीशु के पवित्र नाम में नमस्कार। इस बाइबल अध्ययन कार्यक्रम में शामिल होने के लिए धन्यवाद। मैं आशा करता हूँ कि इस कार्यक्रम के द्वारा आप अवश्य ही परमेश्वर के वचन के ज्ञान में बढ़ेंगे और आत्मिक आशीष भी प्राप्त करेंगे।

जैसा कि इन दिनों में, हम उत्पत्ति की पुस्तक का अध्ययन कर रहे हैं, और आज हम अध्याय 17 के 9 पद से अपने अध्ययन को आरम्भ करेंगे। पिछले अध्ययन में हमने परमेश्वर को अब्राहम के साथ भूमि और वंश (सन्तान) के लिए वाचा बाँधते देखा। आज हम वाचा के चिन्ह के रूप में खतना को देखेंगे।

वाचा के चिन्ह के रूप में खतना

तो आइए हम पढ़ें,

उत्पत्ति 17:9—11

> *"फिर परमेश्वर ने अब्राहम से कहा, तू भी मेरे साथ बाँधी हुई वाचा का पालन करना; तू और तेरे पश्चात् तेरा वंश भी अपनी अपनी पीढ़ी में उसका पालन करे।*
>
> *मेरे साथ बाँधी हुई वाचा, जो तुझे और तेरे पश्चात् तेरे वंश को पालनी पड़ेगी, सो यह है, कि तुम में से एक एक पुरूष का खतना हो।*
>
> *तुम अपनी—अपनी खलड़ी का खतना करा लेना; जो वाचा मेरे और तुम्हारे बीच में है, उसका यही चिन्ह होगा।"*

मित्रों, यहाँ पर खतना, वाचा का एक चिन्ह या प्रतीक है। उन लोगों ने इसलिए खतना नहीं करवाया कि वे वाचा के सदस्य/सहभागी बन जाएँ। परन्तु उन्होंने ऐसा इसलिए किया क्योंकि उनकी वाचा परमेश्वर से थी। मित्रों, खतने ने वो ही स्थान प्राप्त किया जो आज विश्वासियों के जीवन में अच्छे कार्य लेते हैं। आप उद्धार पाने के लिए अच्छा काम नहीं करते हैं। परन्तु अच्छा काम इसलिए करते हैं, क्योंकि आप उद्धार प्राप्त कर चुके हैं। यही एक ख़ास बात है जो संसार के लोगों में भिन्नता प्रगट करती है। लोग उद्धार पाने के लिए अच्छा काम करते हैं। लेकिन यहाँ पर लोग अच्छा काम इसलिए करते हैं क्योंकि वे उद्धार प्राप्त कर चुके हैं।

मित्रों, जब मैं छोटा ही था और पढ़ाई के लिए घर से दूर होस्टल में रहकर अध्ययन किया करता था। उस समय मुझे कई समस्याओं का सामना करना पड़ा। लेकिन मेरे पिता की बातें मुझे याद थी, जो मुझे सामर्थ/बल/शक्ति देती थीं कि मुझे पिता के लिए विश्वासयोग्य रहना है, क्योंकि मैं उनका बेटा हूँ। मेरे पिता की शिक्षा की वजह से मैं बुरी संगति से बचता रहा। अब ध्यान दें, मैं उनका बेटा इसलिए नहीं बन गया, क्योंकि जो उन्होंने करने को नहीं कहा उसे मैंने नहीं किया। लेकिन बात यह है, क्योंकि मैं उनका बेटा हूँ इसलिए मैंने उन कार्यों को नहीं किया जो गलत थे। वाचा का चिन्ह खतना था। जिस बात ने उन्हें वाचा में शामिल किया, वह खतना नहीं था। परन्तु खतना वाचा का एक चिन्ह था, एक प्रमाण था।

हम आगे पढ़ते हैं,

उत्पत्ति 17:12

> *"पीढ़ी–पीढ़ी में केवल तेरे वंश ही के लोग नहीं पर जो तेरे घर में उत्पन्न हों, वा परदेशियों को रूपा देकर मोल लिये जाएँ, ऐसे सब पुरूष भी जब आठ दिन के हों जाएँ, तब उनका खतना किया जाए।"*

मित्रों, क्या आपने यहाँ पर इस बात पर ध्यान दिया, कि यीशु मसीह के जन्म के बारे में कैसे अतिसावधनी बर्ती जा रही है? यीशु मसीह के जन्म से संबंधित सभी व्यवस्था पूरी हो गई है। उसके बारे में यह लिखा गया था कि वह अब्राहम की सन्तान और दाऊद की सन्तान होगा। वह उसी वंशज में से था। और जन्म के बाद आठवें दिन उसका भी खतना किया गया। "वह व्यवस्था के अधीन उत्पन्न हुआ।" पौलुस प्रेरित गलातियों की पत्री 4:4 में ऐसा ही कहते हैं।

आइए अब हम पढ़ें,

उत्पत्ति 17:13

> *"जो तेरे घर में उत्पन्न हो, अथवा तेरे रूपे से मोल लिया जाए, उसका खतना अवश्य ही किया जाए; सो मेरी वाचा जिसका चिन्ह तुम्हारी देह में होगा वह युग–युग रहेगी।"*

यहाँ पर हम दोबारा, खतना को एक चिन्ह के रूप में देखते हैं, जो वाचा का चिन्ह था। उन्हें खतना इसलिए करने की ज़रूरत नहीं थी कि वे वाचा को प्राप्त कर सकें। क्योंकि परमेश्वर ने पहले से ही उनके साथ वाचा बाँधी थी। मैं विश्वास करता हूँ कि आज आप इसे देख रहे हैं क्योंकि यह महत्त्वपूर्ण है। इसलिए आज भी वही सत्य हमारे साथ है। बहुत से लोग यह सोचते हैं यदि वे कलीसिया में, या चर्च में जाते हैं या किसी विधि का पालन करते हैं तो उनका उद्धार हो जाएगा या वे उद्धार प्राप्त

करेंगे। जी नहीं, यह गलत है, और आप ऐसा उद्धार प्राप्त करने के लिए नहीं करते हैं। यदि आपका उद्धार हो गया है, तो आप उन दोनों क्रियाओं को करेंगे। आप कलीसिया से जुड़ेंगे और उस विशेष विधि को भी पूरा करेंगे। परन्तु आप यह क्रिया उद्धार पाने के लिए नहीं करते हैं। मित्रों, मुझे और आपको, रथ को, घोड़े के पीछे रखना है, जहाँ उसे होना चाहिए, न कि उसे घोड़े के आगे रखना है, ताकि घोड़ा चल न सके। वास्तव में आज बहुत से लोगों के उद्धार के संबंध में जो विचार है उनमें घोड़ा रथगाड़ी के अन्दर है।

आगे के पद में लिखा है–

उत्पत्ति 17:14

> *"जो पुरूष खतनारहित रहे, अर्थात् जिसकी खलड़ी का खतना न हो, वह प्राणी अपने लोगों मे से नाश किया जाए, क्योंकि उस ने मेरे साथ बाँधी हुई वाचा को तोड़ दिया।"*

मित्रों, यहाँ पर सही बात तो यह है कि कुछ लोग थे जिन्होंने परमेश्वर की आज्ञा का उल्लंघन किया। (व्यावहारिक तौर पर पूरी जाति ही अनाज्ञाकारी रही, जब वे मिस्र देश से निकलकर आए तब)। वे वाचा के विरोध में नहीं हुए। इस अनाज्ञाकारिता का मतलब था कि प्रत्येक को व्यक्तिगत रीति से बाहर कर दिया जाए। जो कुछ भी हो, जहाँ तक, राष्ट्र/जाति का सवाल है कि कोई व्यक्ति या समूह (दल) इस वाचा को न तोड़े, जिसे परमेश्वर ने अब्राहम के साथ और उसके सन्तानों (बीज) के साथ बान्धा था, जो उसके बाद आनेवाले थे। यह एक अनन्तकालीन वाचा है। और जो व्यक्ति इस वाचा को तोड़ेगा, उसे बाहर निकाल दिया जाएगा। परन्तु वाचा स्थिर रहेगी। यह कितनी आश्चर्य की बात है कि वाचा बनी रहेगी।

मित्रों, आगे हम देखते हैं कि परमेश्वर सारै के नाम को बदलते, और उसे एक पुत्र देने का वायदा करते हैं।

सारै के नाम को बदलना, और उसे एक पुत्र देने का वायदा

अब हम पढ़ते हैं,

उत्पत्ति 17:15

> *"फिर परमेश्वर ने अब्राहीम से कहा, तेरी जो पत्नी सारै है, उसको तू अब सारै न कहना, उसका नाम सारा होगा।"*

पहले अब्राहम की पत्नी का नाम सारै था, लेकिन अब उसका नाम सारा है।

आगे के पद में हम पढ़ते हैं,

उत्पत्ति 17:16

> *"और मैं उसको आशीष दूँगा, और तुझ को उसके द्वारा एक पुत्र दूँगा; और मैं उसको ऐसी आशीष दूँगा, कि वह जाति–जाति की मूलमाता हो जाएगी; और उसके वंश में राज्य–राज्य के राजा उत्पन्न होंगे।"*

यदि अब्राहम इस बुजुर्ग अवस्था में जाति का पिता होने जा रहा है, तो सारा भी एक जाति (राश्ट्र) की माता बनने जा रही है।

आइए हम अगले पद को पढ़ें,

उत्पत्ति 17:17

> *"तब अब्राहम मुँह के बल गिर पड़ा और हँसा, और अपने मन ही मन कहने लगा, क्या सौ वर्ष के पुरूष के भी सन्तान होगा और क्या सारा जो नब्बे वर्ष की है पुत्र जनेगी?"*

वृद्ध अब्राहम इसे सुनकर हँसा। और यह हँसी अविश्वास की नहीं थी। मैं सोचता हूँ कि यह हँसी, एक आनन्द को प्रगट करने की थी, कि इस उम्र में भी मैं पिता बन सकता हूँ। मुझे भरोसा है कि आप में से कई लोगों के ऐसे कुछ अनुभव अवश्य रहे होंगे। मित्रों, प्रतिदिन परमेश्वर हमारे जीवन में कुछ ऐसी बातों को करते हैं, जिसे देखकर कभी–कभी हमें हँसी आ जाती है। यद्यपि हम उसके बारे में कुछ नहीं जानते हैं, कि क्या है कैसे करना है, परन्तु हम उसके बारे में सोचकर हँसते हैं। यह कुछ ऐसा है, जिसे आपने, पहले नहीं सुना है। यहाँ पर हम देखते हैं, "कि सारा की कोख लगभग मर चुकी है। और अब्राहम भी जैसे मरणासन पर है।" क्या आपने कभी ध्यान दिया है, कि पौलुस प्रेरित इसका वर्णन कैसे करते हैं?

आइए हम पढ़ें,

रोमियों की पत्री 4:17–22

> "जैसा लिखा है, *"मैं ने तुझे बहुत सी जातियों का पिता ठहराया है", उस परमेश्वर के सामने जिस पर उसने विश्वास किया, और जो मरे हुओं को जिलाता है, जो बातें हैं ही नहीं उनका नाम ऐसे लेता है कि मानो वे हैं। उसने निराशा में भी आशा रखकर विश्वास किया, इसलिये कि उस वचन के अनुसार कि "तेरा वंश ऐसा होगा, वह बहुत सी जातियों का पिता हो। वह जो एक सौ वर्ष का था, अपने मरे हुए से शरीर और सारा के गर्भ की मरी*

हुई की सी दशा जानकर भी विश्वास में निर्बल न हुआ, और न अविश्वासी होकर परमेश्वर की प्रतिज्ञा पर संदेह किया, पर विश्वास में दृढ़ होकर परमेश्वर की महिमा की; और निश्चय जाना कि जिस बात की उसने प्रतिज्ञा की है, वह उसे पूरा करने में भी समर्थ है। इस कारण यह उसके लिए धार्मिकता गिना गया।"

मित्रों, अब्राहम ने परमेश्वर पर विश्वास किया और परमेश्वर द्वारा किये गए आश्चर्यकर्म और भलाई के द्वारा उत्साह से मर गया। लेकिन अचानक उसके मन में तीर की तरह एक विचार आता है, वह उस छोटे लड़के के बारे में सोचता है, जो उसी का है, और जिसका नाम इश्माएल है।

आगे के पद में पढ़ते हैं,

उत्पत्ति 17:18

"और अब्राहम ने परमेश्वर से कहा, इश्माएल तेरी दृष्टि में बना रहे! यही बहुत है।"

यहाँ पर अब्राहम कह रहा है, "हे प्रभु यह जो छोटा लड़का मेरे घर में बड़ा हो रहा है..." इससे पता चलता है कि अब्राहम, इश्माएल से प्रेम करता है। कुछ समय बाद जब अब्राहम ने उसे घर से निकाल दिया, उस समय इश्माएल चौदह वर्ष का था। मैं नहीं सोचता कि इसके बाद, अब्राहम कभी उसे देख पाया। वह अब्राहम का पुत्र था और अब्राहम अपने पुत्र से प्रेम करता था। लेकिन मैं नहीं जानता आप इश्माएल के बारे में क्या सोचते हैं। यह अब्राहम के लिए एक बहुत ही कठिन समय था कि वह अपने बेटे को घर से निकाल दे या अपने से दूर करे।

मेरा ऐसा मानना है कि अब्राहम ने बहुत बार सोचा होगा कि मैंने हाजिरा को लेकर बहुत बड़ी गलती की। आप उसके जीवन को देखिए, कि वह पाप था जिसने उसे न केवल तंग करके रखा था, परन्तु उस प्रतिज्ञा के देश (भूमि) में भी आरम्भ से ही समस्या रही, यह सब कुछ सिर्फ अब्राहम के पाप के कारण से हुआ। आप मुझसे यह न कहें कि पाप छोटी चीज़ है या यह ऐसा पाप है जिसे आप अपने पास रखते हैं। पौलुस प्रेरित कहते हैं, गलातियों की पत्री 6:7 पद में, *"धोखा न खाओ, परमेश्वर ठट्ठों में नहीं उड़ाया जाता, क्योंकि मनुष्य जो कुछ बोता है वही काटेगा।"* इस वचन के आधार पर हमें पता चलता है कि हर एक व्यक्ति एक ही जैसा नहीं काटेगा, परन्तु जो उसने बोया है, वही काटेगा। और अब्राहम निश्चय ही उसे काट रहा था, जिसे उसने बोया था। "यह कितना अच्छा होता कि इश्माएल उसके सामने रहता।"

लेकिन हम आगे के पद में पढ़ते हैं,

उत्पत्ति 17:19

"तब परमेश्वर ने कहा, निश्चय तेरी पत्नी सारा के तुझ से एक पुत्र उत्पन्न होगा; और तू उसका नाम इसहाक रखना : और मैं उसके साथ ऐसी वाचा बाँधूँगा जो उसके पश्चात् उसके वंश के लिये युग–युग की वाचा होगी।"

दूसरे शब्दों में कहें, कि परमेश्वर कहते हैं, "नहीं, मैं उसे स्वीकार नहीं करता हूँ। वह गलत था या सही नहीं था।" आप यह न कहें, कि परमेश्वर ने एक से अधिक पत्नी रखने की अनुमति दे दी है, सिर्फ इसलिए कि यह बाइबल की लेख में मौजूद (दर्ज) है। मित्रों, मैं यहाँ पर कहीं भी नहीं देखता कि परमेश्वर इसे स्वीकृति दे रहे हैं।

आगे हम देखते हैं, कि इश्माएल से भी एक बड़ा राष्ट्र बनता है। जिसे हम पद 20–21 पद में पढ़ते हैं,

इश्माएल से भी एक बड़ा राष्ट्र बनना

हम पढ़ें,

उत्पत्ति 17:20,21

"और इश्माएल के विषय में भी मै ने तेरी सुनी है : मैं उसको भी आशीष दूँगा, और उसे फलवंत करूँगा और अत्यन्त ही बढ़ा दूँगा; उस से बारह प्रधान उत्पन्न होंगे, और मैं उस से एक बड़ी जाति बनाऊँगा।

परन्तु मैं अपनी वाचा इसहाक ही के साथ बाँधूँगा जो सारा से अगले वर्ष के इसी नियुक्त समय में उत्पन्न होगा।"

मित्रों, यहाँ पर हम देखते हैं कि परमेश्वर ने जो प्रतिज्ञा दी है, उसे वह थामे हुए है। परमेश्वर को इससे नहीं रोका जा सकता है, और न ही टाला जा सकता है। उसने जो कहा है, वह उसी चीज़ को करने जा रहे हैं, और करेंगे। यहाँ पर वह ऐसी बातें कर रहे हैं, जैसे कि इसहाक का जन्म पहले ही हो चुका है और वह उनके मध्य में है। जबकि उसका जन्म अभी हुआ ही नहीं है। वह बात कर रहे हैं, जो हैं ही नहीं पर मानो उनकी दृष्टि में सब कुछ है। जबकि इसहाक अगले वर्ष जन्म लेने वाला है। फिर भी यहाँ पर ऐसी बातें हो रही हैं, जैसे सब कुछ हो गया है।

मित्रों, आइए हम इस पद को पढ़ें,

उत्पत्ति 17:22

"तब परमेश्वर ने अब्राहम से बातें करनी बन्द कीं और उसके पास से ऊपर चढ़ गया।"

अगर हम दूसरे शब्दों में कहें, तो उससे कहा, कि अब्राहम अब तुम्हें बिल्कुल शान्त बैठना चाहिए।

क्योंकि परमेश्वर ने इसका फैसला पहले ही कर लिया है। प्रिय मित्रों, कुछ चीज़ें हैं, जिसके लिए मुझे और आपको परमेश्वर से मांगना बन्द कर देना चाहिए। एक समय ऐसा भी आया, जहाँ आपने कहा कि, बस बहुत हो गया और आगे कुछ कहने की ज़रूरत नहीं है। कई बार लोग परमेश्वर को प्रार्थना करके कष्ट पहुँचाते हैं, जबकि उन्हें उनकी प्रार्थना का उत्तर मालूम है कि वह न में है। परमेश्वर ने अब्राहम से कहा, बस अब यही एक है। और बहुत हो चुका, अब दोबारा इसे याद दिलाने की कोई आवश्यकता नहीं है। मैंने इसे स्वीकार नहीं किया है और इसके हाँ कहने का मेरा कोई इरादा नहीं है। इसलिए अब परमेश्वर, अब्राहम की दूसरी प्रार्थनाओं का उत्तर देने जा रहे हैं। और हम आगे देखते हैं, कि परमेश्वर अब्राहम की प्रार्थना सुनते हैं, जो भी हो, पर वे इसहाक के साथ ही अपनी वाचा कायम रखना चाहते हैं, न की इश्माएल के साथ। यह बिल्कुल निश्चित हो चुका है इसलिए अब लगता है कि अब्राहम परमेश्वर के मन को बदलने की कोशिश नहीं करेगा। मित्रों, आज बहुत से लोग हैं जो परमेश्वर से उन चीज़ों के लिए प्रार्थना करते हैं, जिसे सुनने के लिए परमेश्वर का इरादा नहीं है या उत्तर देने का इरादा नहीं है। मैं कुछ निश्चित विषय के लिए लोगों से प्रार्थना करने के लिए कहने के बारे में बहुत सावधान रहने की कोशिश करता हूँ। मैं सोचता हूँ कि कम से कम मुझे इतना महसूस हो, जैसे कि परमेश्वर के सुनने का उचित समय है और उत्तर देने का भी। अर्थात् मैं यह जानूँ कि प्रार्थना सुनने और उत्तर मिलने का अवसर है।

मित्रों, आइए अब हम 23 से 27 तक के पदों को पढ़ें, और देखें कि इसमें से हम क्या सीखते हैं। तो आइए हम इसे पढ़ें,

उत्पत्ति 17:23–27

> *"तब अब्राहम ने अपने पुत्र इश्माएल को, उसके घर में जितने उत्पन्न हुए थे, और जितने उसके रूपये से मोल लिये गए थे, अर्थात उसके घर में जितने पुरूष थे, उन सभों को लेके उसी दिन परमेश्वर के वचन के अनुसार उनकी खलड़ी का खतना किया।*
>
> *जब अब्राहम की खलड़ी का खतना हुआ तब वह निन्नानवे वर्ष का था।*
>
> *और जब उसके पुत्र इश्माएल की खलड़ी का खतना हुआ तब वह तेरह वर्ष का था।*
>
> *अब्राहम और उसके पुत्र इश्माएल दोनों का खतना एक ही दिन हुआ।*
>
> *और उसके घर में जितने पुरूष थे जो घर में उत्पन्न हुए, तथा जो परदेशियों के हाथ से मोल लिये गए थे, सब का खतना उसके साथ ही हुआ।"*

खतना वाचा का एक चिन्ह या प्रतीक है जिसे परमेश्वर ने अब्राहम के साथ बाँधी थी। हो सकता है कि

आप में से कुछ लोग पूछेंगे कि, फिर क्यों इश्माएल को इसमें शामिल किया गया? क्या परमेश्वर ने यह प्रतिज्ञा नहीं दी थी, कि वह इश्माएल से भी एक बड़ा राष्ट्र (जाति) बनाएँगे? यहाँ पर इश्माएल के द्वारा भी एक बड़ा राष्ट्र बनने जा रहा था इसलिए शामिल किया गया है, लेकिन यह वह नहीं है जिसकी परमेश्वर ने अब्राहम से आरंभ में प्रतिज्ञा की थी। ये उस राष्ट्र का पिता नहीं हो सकता था, जिसे परमेश्वर बनाना चाहते हैं, और जिसमें से मसीह का आना निश्चित था। मित्रों, यहाँ पर 17 अध्याय समाप्त होता है, लेकिन हम अपने अध्ययन को जारी रखते हुए अध्याय 18 के कुछ पदों को अवश्य देखेंगे।

अध्याय 18

जब तक आप नये नियम में प्रवेश नहीं करते हैं, आपको यह समझ में नहीं आएगा कि आखिर बाइबल में उत्पत्ति की पुस्तक में 18 और 19 अध्याय क्यों शामिल किए गए हैं। ये ऐसे लगते हैं मानो अब्राहम की कहानी से अलग किए हुए हैं। यद्यपि ये अध्याय सदोम और अमोरा के बारे में वर्णन देते हैं, फिर भी यह अलग सा लगता है।

मित्रों, उत्पत्ति का 18 अध्याय बड़ा लम्बा लगता है, जिसमें परमेश्वर अब्राहम से सदोम और अमोरा के न्याय के बारे में कहते हैं। और अब्राहम उस मैदानी शहर की ओर से मध्यस्थता करते हैं। मित्रों, यह एक उदाहरण है, और मैं एक आशीषित मसीही जीवन के बारे में सोचता हूँ, एक जीवन जो परमेश्वर की संगति में है। परन्तु यहाँ अध्याय 19 में सदोम और अमोरा के साथ लूत है, आप देखना चाहेंगे कि मैं इसे क्या पुकारना पसन्द करूँगा, मैं इसे अभिशाप जीवन कहता हूँ, यह सब कुछ सिर्फ एक निर्णय लेने से हुआ।

मित्रों, सौभाग्य से हमारे पास आज भी इस तरह के दो मसीही पाए जाते हैं। कुछ लोग हैं जो आशीषित जीवन जी रहे हैं और दूसरे हैं जो अभिशाप या विनाश का जीवन जी रहे हैं। वे लोग जिन्होंने वास्तव में अपने जीवन रूपी जहाज़ में छेद कर लिया है, वे लोग पूर्णतः परमेश्वर की इच्छा से बाहर हो चुके हैं। मैं यहाँ पर यह नहीं कहना चाह रहा हूँ कि उन्होंने उद्धार को खो दिया है, परन्तु इतना निश्चित है कि उन्होंने अपना सब कुछ खो दिया है। जिस प्रकार प्रेरित पौलुस 1 कुरिन्थियों 3:15 में कहते हैं, *"... पर वह आप बच जाएगा परन्तु जलते–जलते।"* जी हाँ, वह बच तो जाएगा, परन्तु जलते–जलते।

अब हम आगे बढ़ते हुए देखेंगे कि परमेश्वर अब्राहम को दर्शन देते हैं और पुत्र देने की प्रतिज्ञा को पुनः निश्चित करते हैं।

अब्राहम को परमेश्वर का दर्शन और पुत्र देने की पुनः प्रतिज्ञा को निश्चित करना

तो आइए हम पढ़ें,

उत्पत्ति 18:1

> *"अब्राहम मम्रे के बांज वृक्षों के बीच कड़ी धूप के समय तम्बू के द्वार पर बैठा हुआ था, तब यहोवा ने उसे दर्शन दिया :"*

अब्राहम अपने बुढ़ापे की अवस्था में, मम्रे में रह रहा था, जहाँ परमेश्वर ने उसे दर्शन दिया।

आगे के पद में लिखा है।

उत्पत्ति 18:2

"और उस ने आँख उठाकर दृष्टि की तो क्या देखा, कि तीन पुरूष उसके सामने खड़े हैं : जब उस ने उन्हें देखा तब वह उन से भेंट करने के लिये तम्बू के द्वार से दौड़ा, और भूमि पर गिरकर दण्डवत् की और कहने लगा,"

मित्रों, यहाँ पर ध्यान दीजिए कि अब्राहम किस प्रकार की अतिथि सेवा दे रहा है। एक छोटी कहानी मैंने पिछले अध्याय में कही थी – जिसकी सत्यता का ठोस आधार है, यद्यपि मैं नहीं समझता हूँ कि यह घटना घटित हुई। यहाँ पर मुख्य विषय यह है कि यह व्यक्ति, अब्राहम, बहुत ही दयालु और अतिथि सेवा करनेवाला व्यक्ति है।

हम आगे के पद में पढ़ते है,

उत्पत्ति 18:3–4

"हे प्रभु, यदि मुझ पर तेरी अनुग्रह की दृष्टि है तो मैं विनती करता हूँ, कि अपने दास के पास से चले न जाना।

मैं थोड़ा सा जल लाता हूँ और आप अपने पाँव धोकर इस वृक्ष के तले विश्राम करें।"

मित्रों, यह हम सभों के लिए विचित्र सा लगता है कि एक राहगीर को जिसे आप जानते भी नहीं हैं, कहते हैं कि आइए पैर धोकर आराम कीजिए। मैं समझता हूँ कि आज के दिनों में हममें से कोई भी ऐसा नहीं कहेंगे। परन्तु यह उस समय की परंपरा रही होगी। आप याद कीजिए उस घटना को जब प्रभु यीशु मसीह उपरौठी कोठरी में थे और उन्होंने अपने शिष्यों के पैर धोए। और यहाँ पर एक अद्भुत आत्मिक सन्देश है। अब्राहम कहते हैं, "आप लोग अपने पाँव धो लें।" यह अतिथि सत्कार का एक वास्तविक तरीका था, जब कोई अतिथि घर में आता है और उसका जूता खोलकर पाँव धोते हैं, उन दिनों वे अपनी पगड़ी या टोपी नहीं उतारते थे परन्तु जूता उतारते थे। मैं नहीं जानता कि कौन सा सही है। परन्तु मैं व्यक्तिगत रीति से जूता उतारना पसन्द करता हूँ। कई बार मुझे खाली पैर चलने में आनन्द मिलता है, और मेरी इच्छा है कि ऐसा ही होता रहे कि मैं अधिक चल सकूँ। मुझे खाली पैर (नंगे पैर) चलना अच्छा लगता है। मैं समझता हूँ कि उन दिनों में यह एक बड़ी प्रथा या परंपरा थी। और वास्तव में जब आप किसी के घर में जाते हैं और आपके जूते उतार कर पाँव धोए जाते हैं, तो आपको अपनापन लगता है अर्थात् अपना घर जैसे लगता है। और कहा जाता है कि आप पेड़ के छाँव में आराम करें। मित्रों, यहाँ पर अब्राहम वास्तव में अपने अतिथियों का स्वागत राजसी (उच्च) तरीके से कर रहा है, किसी प्रकार की घटी व कमी होने नहीं दे रहा है।

अब हम यहाँ पर इन पदों को पढ़ेंगे,

उत्पत्ति 18:5–8

> *"फिर मैं एक टुकड़ा रोटी ले आऊँ और उस से आप अपने जीव को तृप्त करें; तब उसके पश्चात् आगे बढें : क्योंकि आप अपने दास के पास इसी लिये पधारे हैं। उन्होंने कहा, जैसा तू कहता है वैसा ही कर।*
>
> *तब अब्राहम तुरन्त तम्बू में सारा के पास फुर्ती से जाकर कहा, तीन सआ मैदा फुर्ती से गून्ध, और फुलके बना।*
>
> *फिर अब्राहम गाय बैल के झुण्ड में दौड़ा, और एक कोमल और अच्छा बछड़ा लेकर अपने सेवक को दिया, और उसने फुर्ती से उसको पकाया।*
>
> *तब उस ने मक्खन, और दूध, और वह बछड़ा, जो उस ने पकवाया था, लेकर उनके आगे परोस दिया; और आप वृक्ष के तले उनके पास खड़ा रहा, और वे खाने लगे।"*

मित्रों, क्या यह मनोरंजन करने का अद्भुत तरीका नहीं है? अब्राहम ने अच्छे पशु के मांस के साथ भोजन तैयार किया है, उसने एक अच्छे पशु (बछड़े) को लेकर, अपने नौकर को दिया और नौकर ने उसे मारकर, स्वादिष्ट तरीके से भोजन पकाया, और हो सकता है कि यह उस समय के सबसे अच्छे भोजन में एक था। और उसे अच्छी तरह सजाकर परोसा गया। "तब उसने दूध और दही भी परोसा।" जो वास्तव में एक त्यौहार के भोजन जैसे लग रहा था। अब्राहम ने इन तीनों अतिथियों की देखभाल बहुत अच्छी रीति से की अर्थात् उनका मनोरंजन कराया।

तब हम यह पाते हैं कि ये तीनों अतिथि राजसी हैं, हम नये नियम में इब्रानियों 13:2 पद में पढ़ते हैं, कि *"अतिथि–सत्कार करना न भूलना, क्योंकि इसके द्वारा कुछ लोगों ने अनजाने में स्वर्गदूतों को आदर–सत्कार किया है।"* और वास्तव में यह अब्राहम ही था जो यह बिना जाने कि वे स्वर्गदूत हैं उनकी सेवा टहल की।

मित्रों, आज हम अपने इस अध्ययन को यहीं पर समाप्त करते हैं। और मैं आशा करता हूँ कि अगले अध्ययन में हम अवश्य आपसे नए विषय के साथ मिलेंगे। प्रभु आप सभों को कुशलपूर्वक रखे और आशीष दें।